''जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान में प्रांसगिकता'' (एक अध्ययन)

प्रस्तावनाः—

''शिक्षा'' शब्द का बहुत व्यापक अर्थ है। शिक्षा एक प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु—पर्यन्त निरन्तर चलती रहती है। शिक्षा व्यक्ति एवं समाज की प्रगति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा के द्वारा मानव अपनी विचारधारा, तर्क शक्ति, मूल्यों, समस्या, समाधान, रचनात्मक दृष्टिकोण तथा बुद्धि का विकास करता है।

''शिक्षा'' एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपने वातावरण के साथ सामायोजन करने योग्य बनाती है शिक्षा मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाकर सांस्कृतिक धरोहर को आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करने के काबिल बनाती है। शिक्षा से ही मानव का सर्वागीण विकास होता है।

शिक्षा का महत्व अनेक दृष्टि से है। शिक्षा का कार्य क्षेत्र इतना व्यापक है इसके अन्तर्गत वे सभी कार्य आ जाते हैं । जिनको पूरा करने से व्यक्ति अपने जीवन को सफल बनाते हुये सामाजिक कार्यो को उचित समय पर पूरा करने योग्य बन जाता है। शिक्षा प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता और संस्कृति का मूल आधार रही है। आधुनिक काल में व मध्य काल में शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन हुये और हम हमारी मौलिक शिक्षा पद्धति से विमुख हो गये क्योंकि ब्रिटिश शासन ने हमारी शिक्षा प्रणाली में व्यापक

बदलाव कर उसके स्वरुप को ही बदल दिया जिसके कारण आज हमारी शिक्षा प्रणाली आधारहीन होकर रह गई है और शिक्षा में नित नये प्रयोग करने के बाद भी वह अपना मौलिक स्वरुप प्राप्त नहीं कर पा रही हैं।

भारत में समय–समय पर शिक्षा मनीषियों ने शिक्षा प्रणाली को राष्ट्रीय हितों के अनुरुप बनाने का प्रयास किया है। जे. कृष्णमूर्ति इसी कड़ी से जुड़े हुये हैं। इस महान शिक्षाशास्त्री ने प्राचीन शिक्षा का आधुनिक शिक्षा के साथ सांमजस्य स्थापित कर अपने शिक्षा विचारों का प्रतिपादन किया। जे. कृष्णमूर्ति ने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किये और देशकाल के अनुरुप राष्ट्रीय शिक्षा योजना तैयार की ।

शिक्षा के बारे में विभिन्न दार्शनिकों ने अपने अपने विचार दिये हैं :–

भारतीय शिक्षाशास्त्रियों के विचार –

(अ) स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में– '' मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।

(ब) महाकवि रविन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार '' शिक्षा मनुष्य के जीवन के समस्त विश्व का सम्बन्ध स्थापित करती है।

(स) महात्मा गॉधी के शब्दों में '' शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वागीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।

(द) डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार– शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए।

पाश्चात्य विचारकों के विचारः–

(अ) जॉन डी.वी. के अनुसार– शिक्षा व्यक्ति की उन सब योग्यताओं का विकास है जो उसमें अपनें पर्यावरण पर नियंत्रण रखने वाली अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करने की सामर्थ्य प्रदान करें।

(ब) फ्रोबेल के अनुसार– शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक की अन्तः शक्तियों को बाहर लाया जाता है।

(स) पेस्टॉलाजी के अनुसार– शिक्षा मानव की आन्तरिक शक्तियों का स्वाभाविक, सांमजस्पूर्ण और प्रगतिशील विकास है।

जे. कृष्णमूर्ति का जीवन परिचय :–

जे. कृष्णमूर्ति का पूरा नाम जिद्दू कृष्णमूर्ति है। इनका जन्म 11 मई 1885 में आन्ध्र प्रदेश के चितूर जिले के मदनापल्ली नामक स्थान में हुआ । इनकी माता जिद्दू संजीवम्मा मृदुभाषी एवं धर्मपरायण महिला थी ओर इनके पिता जिद्दू नारायण एक अवकाश प्राप्त सिविल सर्वेन्ट के साथ साथ पुराने थियोसोफिस्ट थे। इनके जन्म के समय विकराल परिस्थिति एवं आठवीं संतान होने के कारण इन्हे कृष्णमूर्ति के नाम से जाना गया । दस वर्ष की आयु में इनकी माता की मृत्यु के पश्चात यह अपने पिता और अन्य भाईयों

के साथ 1908 में मद्रास के अडयार में थियोसोफिकल सोसायटी के परिसर में ही रहने लगे और उन्होने अपनी सेवायें सोसायटी को समर्पित कर दी। कृष्णमूर्ति की गहरी आध्यात्मिकता को देखकर उस समय के महान थियोसाफिस्ट सी.डब्लू. लीड बीटर और श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने यह स्वीकार किया कि इस बालक का भविष्य एक महान आध्यात्मिक शिक्षा के रुप में विश्व का मार्गदर्शन कर सकता है।

श्रीमती ऐनीबेसेन्ट ने इन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैण्ड भेजा। जहॉ इन्हे अंग्रेजी साहित्य पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ 1920 में एनीबेसेन्ट इन्हे वापस उडयार ले गई और बेसेन्ट के संरक्षण में उनका आध्यात्मिक विकास हुआ एवं आगे चलकर वे महान वक्ता और विचारक बनें।

सन् 1922 में जे. कृष्णमूर्ति को गहरी आध्यात्मिक अनुभूति हुई । इन्हे उस करुणा की अनुभूति हुई जिससे सारे कष्ट एवं दुःख दूर हो जाते है। बस क्या था ये मानव कल्याण के लिए आतुर हो उठे और मनुष्यों को दुःखों से मुक्त होने का मार्ग दिखाने लगें। भारत इंग्लैण्ड और अमेरिका में इन्होने विशेष प्रकार के स्कूल स्थापित किये, जहॉ लगभग प्रत्येक वर्ष जाते थे।

कृष्णमूर्ति मनुष्य को बिना शर्त मुक्त करने के अपने दृढ़ निश्चय से कभी नही हटे। सभी लोग समान रुप से कृष्णमूर्ति के व्यक्तित्व सौन्दर्य,

प्रसन्नता, करुणा और प्रेम से उनके निकट खिचें आते थे और वे अपने मधुर वचनों से लोगो के आहत मन को स्वस्थ और पीड़ा मुक्त कर देते थे इन्होने कभी भी अपने को किसी देश विदेश किसी जाति विशेष का नहीं माना। उन्होने कहा है कि हम स्वयं ही अपने दोषों को पता लगायें क्योकिं हमने स्वयं लोभ, राष्ट्रवाद, स्पर्धा तथा सभी प्रकार की स्वार्थपरता को उत्पन्न किया है। वे सच्चे अर्थो में सम्पूर्ण मानव जाति के शिक्षक थे। जे. कृष्णमूर्ति ने केवल सदविचार ही व्यक्त नहीं किए अपितु आज भी जनहित कार्यो में सलंग्न है। इस फाउन्डेशन ने देश विदेश में कई शिक्षा संस्थाएं स्थापित की है। वास्तव में कृष्णमूर्ति एक महान दार्शनिक थे जिन्होने आत्म–चिन्तन पर बल दिया उन्होने मौलिक, क्रांतिकारी सारगर्भित और उदार विचार भारतीय शिक्षक के रुप में इतिहास की अमुल्य निधि हैं।

जे. कृष्णमूर्ति का शैक्षिक विचारः–

जे. कृष्णमूर्ति के दार्शनिक विचार उनके मस्तिष्क की उपज थे। अपने दार्शनिक विचारों द्वारा ही उन्होने शैक्षिक विचारों का प्रतिपादन किया। उनकी शिक्षा का मुख्य उदे्श्य नवीन संस्कृति और विश्व का निर्माण करना था। उन्होने मानव बनाने के लिए शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया।

इनके शिक्षा सम्बन्धी विचार मुख्य रुप से इनकी रचनाओं –शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य, शिक्षा संवाद, स्कूलों के नाम पत्र तथा सीखनें की कला में देखनें को मिलते है। इसी क्रम में उनकी शिक्षा का अर्थ निम्नलिखित हैः

शिक्षा का अर्थः– जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार '' शिक्षा द्वारा ही मनुष्य को जीवन का सही अर्थ समझाया जा सकता है और शिक्षा द्वारा ही उसे अनुचित मार्ग से सम्मार्ग पर लाया जा सकता है।

अन्तः मन का ज्ञान ही शिक्षा है अर्थात शिक्षा वह है जो मनुष्य का आत्मज्ञान करवाए।

समस्या का औचित्यः–

शिक्षा के बारे में बहुत से दर्शनिकों ने अपने अपने विचार दिये है जैसेः–

1.) रविन्द्रनाथ टैगोर

2.) स्वामी विवेकानन्द

3.) डॉ. डी.वी

4.) फ्रोबेल इत्यादि

जे. कृष्णमूर्ति एक भारतीय दार्शनिक थे जिनकी शैक्षिक विचारधारा अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उन्होने शिक्षा के कई पक्षों पर अपने विचार दिये है।

वे विचार वर्तमान समय में कितने प्रांसगिक है। इसका अध्ययन करना शोधकर्ता को उपयुक्त लगा।

जे. कृष्णमूर्ती के शैक्षिक दर्शन पर बहुत कम काम किया गया है

तनेजा वी.आर. (2003) – ''शिक्षा के लिए सामाजिक–दार्शनिक दृष्टिकोण''

इस पुस्तक में समाजशास्त्र और शिक्षा, लोकतंत्र और सामाजिक परिवर्तन के कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई है। लेखक के अनुसार दर्शन और शिक्षा में द्विपक्षीय सम्बन्ध है।

डीवी.जे (2004) – ''लोकतंत्र और शिक्षा''

इस पुस्तक में सामाजिक पर्यावरण के संदर्भ में शैक्षिक दर्शन पर चर्चा की। इसमें जोन डीवी ने विभिन्न विषयों के अन्तर्गत शैक्षिक दर्शन पर अपने विचार का वर्णन किया है।

जानस्टॅन, जेम्स स्कॉट (2006)

पूछताछ और शिक्षाः जान डीवी और द क्रेस्ट फॉर डेमोक्रेसी'' डेवी अध्ययनों के लिए एक पूरी तरह से अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है। **जानस्टॅन** कहते हैं कि ''पूछताछ'' संदर्भ संचालित है। उन्होंने ऐतिहासिक सामाजिक तथा व्यवस्थित रुप से विश्लेषण किया गया ।

कृष्णमूर्ति जे (2006) ''कृष्णामूर्ति की नोटबुक''

और जे. कृष्णमूर्ति द्वारा लिखे गये अन्य विचारों पर अनुभव आधारित ज्ञान पर ध्यान दिया गया है

ठाकुर और बरवाल (2007) – ''इमर्जिंग इंडियन सोसायटी में शिक्षा'' वर्तमान भारतीय संदर्भ में शिक्षा से संबधित अवधारणाओं का विश्लेषण किया गया है। इनके विचार आध्यात्मिक मूल्यों की कमी तथा आलोचना से परिपूर्ण थे।

कृष्णमूर्ति जे (2010) ''स्वतंत्रता से ज्ञात''

सीखने के रुप में जीवन और दर्शन के विभिन्न पहलुओं, आत्म चिंतन स्वतंत्रता और अनुभव इत्यादि पर चर्चा की गई। इनके अनुसार स्वतंत्रता मन की स्थिति है।

समस्या कथनः– ''जे कृष्णमूर्ती के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता''

शोध अध्ययन के उद्देश्यः–

किसी भी कार्य को करने का एक निश्चित उद्देश्य होता है, उद्देश्यों के बिना कार्य हो या अनुसंधान दिशाहीन हो जाता है।

वी.डी.भाटिया के शब्दों में:– उद्देश्य के अभाव में बालक उस नाविक के समान है, जो अपनी मंजिल नहीं जानता है और वह पतवार विहीन नौका कि तरह लहरो के थपेडे खाकर किसी मीनार पर जा लगेगा। किसी भी कार्य की

सफलता उसके निर्धारित किये गये उद्देश्यों पर बहुत निर्भर करती है उद्देश्यों की स्पष्टता अंनुसंधान को सरल एवं सफल बना देती है।

उद्देश्य किसी कार्य का अंतिम बिन्दु है जहॉ तक पहुॅचने का सतत प्रयास किया जाता है। उद्देश्य विहीन कार्य उस रेत के समान है जो समय के साथ–साथ धूमिल होता जाता है जीवन का प्रत्येक क्षण किसी न किसी उद्देश्य से संलग्न है।

इसी संदर्भ में यदि शोध कार्य की बात करें तो प्रत्येक शोध कार्य किसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु किया जाता है। सही ,उपयुक्त, उद्देश्य तथा अनुंसधान कार्य को उचित दिशा प्रदान कर सकते है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने अग्रलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया है।

मुख्य उद्देश्य –

जे.कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।

सहायक उद्देश्य–

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन का निम्न के संदर्भ में अध्ययन करना

1.) शिक्षा के उद्देश्य

2.) शिक्षा का पाठ्यक्रम

3.) शिक्षण विधियॉ

4.) छात्र शिक्षक सम्बंध

5.) अनुशासन की संकल्पना

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान समय में प्रासंगिकता का अध्ययनः –

(1) शिक्षा के उद्देश्य

जे.कृष्णमूर्ति के अनुसार	वर्तमान शिक्षा
जे. कृष्णमूर्ति के विचारों में शिक्षा द्वारा ही मनुष्य को जीवन का सही अर्थ समझाया जा सकता है।	वर्तमान समय में व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनाने के लिए शिक्षा अत्यधिक आवश्यक है।

(2) शिक्षा का पाठ्यक्रम

जे. कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा का मूल उद्देश्य एक सन्तुलित मानव का विकास करना है।	वर्तमान समय में भी शिक्षा का उद्देश्य बालक का संर्वागीण विकास करना है।

(3) शिक्षण विधियॉ

जे. कृष्णमूर्ति ने शिक्षण विधियों में अत्यधिक बल क्रिया विधि पर दिया, शिक्षा एवं प्रकृति में सहसम्बन्ध स्थापित कर शिक्षण करवाया जाना चाहिये।	वर्तमान समय में भी प्रयोगात्मक कार्यो पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है।

(4) छात्र–अध्यापक सम्बन्ध

जे. कृष्णमूर्ति का मानना था कि अध्यापक को बालको के साथ प्रेमपूर्ण	वर्तमान समय में भी अध्यापक एवं बालक के मध्य जो खाई है उसे दूर

व्यवहार करना चाहिए। अध्यापक का कार्य छात्र को स्वयं सीखने में सहायता करना है।	करने का प्रयास किया जा रहा है तथा अध्यापक एवं छात्रों के मध्य मधुर सम्बन्धों पर बल दिया जा रहा है

(5) अनुशासन की संकल्पना

जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार अनुशासन परम्परागत सिद्धान्तों पर आधारित नहीं होना चाहिए। वे बालकों की पूर्ण (आन्तरिक व बाह्य) स्वतंत्रता देने के पक्ष में थे।	वर्तमान समय में अनुशासन तभी प्राप्त किया जा सकता है जब उसमें स्वतंत्रता के साथ नियंत्रण भी आवश्यक है ।

जे. कृष्णमूर्ति (1895–1986) की गणना आधुनिक युग के श्रेष्ठ चिन्तकों में की जा सकती है। उन्होंने अति मूल्यवान शिक्षा दर्शन प्रदान किया। जे. कृष्णमूर्ति क्रान्तिकारी विचारक थे इन्होने नई पीढ़ी की समस्याओं की ओर विशेष ध्यान दिया ।

शोध में प्रयुक्त परिभाषीकरण–

किसी भी अनुंसधान को सफलतापूर्वक करने के लिए आवश्यक है कि समस्या की प्रकृति के अनुरुप विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले शोध कार्य में जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन किया गया है। जिस में शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, अनुशासन शिक्षण विधियॉ ये सभी दर्शन द्वारा निर्धारित होते है।

प्रासंगिकता से तात्पर्य– उनके शैक्षिक विचार शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों आदि के बारे में कितने उपयोगी है।

शोध में प्रयुक्त चरः–

गेस्टि महोदय के अनुसार चर वह लक्षण या गुण है। जिसकी मात्रा में परिवर्तन होता है और वह परिवर्तन किसी माप या आयाम पर होता है।

करलिंगर के अनुसार– ''चर वह गुण है जिसके विभिन्न मूल्य हो सकते है''।

जे. कृष्णमूर्ति की शैक्षिक दर्शन विचारधारा–**स्वतंत्र चर**

शैक्षिक दर्शन विचारधारा की प्रांसगिकता–**आश्रित चर**

शोध क्षेत्रः–

शोधकर्त्री ने अपनी द्वारा किये जाने वाले शोधकार्य को उद्देश्यों के आधार पर सीमित किया है। जिसमें शोधकर्त्री द्वारा जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन के विचारों के अध्ययन के लिए उनकी रचनाओं, शैक्षिक तत्वों का संकलन तथा उनके व्यक्तित्व–कृतित्व सृजन कृतियों, पत्र–पत्रिकाओं आदि तक अपने शोध कार्य को परिसीमित किया है।

तार्किक विश्लेषण–

शोधकर्त्री द्वारा किये जाने वाले शोध में विषयवस्तु का तार्किक विश्लेषण किया गया है क्योकि विषयवस्तु के तार्किक विश्लेषण के पश्चात् जे.

कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों की प्रांसगिकता एवं उपादेयता के बारे में ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

शोध की प्रक्रिया–

दार्शनिक शोध में मानव के अनुभवों पर उसकी सत्यता का प्रतिस्थापन किया जाता है। दर्शन से अनुभवों का अध्ययन बौद्धिक स्तर पर किया जाता है, जिससे सत्य के नियमों तथा अस्तित्व के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जा सके। तार्किक ढ़ग से चिन्तन को निम्न चरणो में किया गया–

प्रथम चरण– में शोधकर्त्री ने विभिन्न स्थलों से शोध से सम्बन्धित साहित्य का संकलन किया।

द्वितीय चरण– में साहित्य कृतित्व, लेख, पुस्तके, जीवनी आदि जो अन्य विद्वानों द्वारा लिखी गयी है साथ ही समाचार पत्र–पत्रिकाएं में से विषयवस्तु विश्लेषण पर उद्देश्यानुसार विचारो का क्रमबद्ध संकलन किया।

तृतीय चरण– में शैक्षिक विचारों के रुप में नवीन तथ्य खोजकर अर्थात उद्देश्यानुसार शैक्षिक तत्वों की खोज पश्चात उनका विश्लेषित किया गया।

चतुर्थ चरण– में विश्लेषित किये गये शैक्षिक विचारों कि उद्देश्यानुसार व्याख्या करके निष्कर्ष प्राप्त किया है।

पंचम चरण– में प्राप्त शोध निष्कर्षो के आधार पर पूर्वानुमान की जॉच की गई है।

अध्ययन की परिसीमाएँ–

किसी भी शोध प्राक्रिया में साधन, शक्ति और समय सीमित होने के कारण समस्या के सभी पक्षों का गहन अध्ययन करना कठिन होता है, इसलिए संबन्धित विषयवस्तु का परिसीमन करना आवश्यक हो जाता है। परिसीमन से तात्पर्य शोध समस्या को सीमाओं में रखकर देखने से है।

समस्या की परिसीमाएँ–

शिक्षा में बहुत से पक्ष होते है, लेकिन हम पॉच पक्षों पर ही विचार करेंगे।

1.) शिक्षा के उद्देश्य

2.) शिक्षा का पाठ्यक्रम

3.) शिक्षण की विधियॉ

4.) छात्र–शिक्षण सम्बन्ध

5.) अनुशासन की संकल्पना

प्रस्तावित शोध अध्यायों का वर्गीकरण

किसी भी कार्य को व्यवस्थित रुप से सम्पन्न करने के लिए उसकी एक पूर्व निर्धारित सुनिश्चित करने के लिए उसकी एक पूर्व निर्धारित सुनिश्चित योजना बना लेना अतिआवश्यक है। क्रमबद्धता एवं निश्चित कार्यप्रणाली ही कार्य को सफलता प्रदान कर सकती है। प्रस्तुत कार्य को व्यवस्थित रुप से

लिपिबद्ध करने के लिए शोध प्रबंध को पॉच अध्याय में वर्गीकृत किया गया है–

प्रथम अध्याय – शोध का प्रस्तुतीकरण

द्वितीय अध्याय – सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

तृतीय अध्याय– जे. कृष्णामूर्ति का ौक्षिक दार्शनिक चिन्तन की वर्तमान में प्रासगिकता

चतुर्थ अध्याय– विषयवस्तु विश्लेषण

पंचम अध्याय– निष्कर्ष व सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बैपलेस : एन ऐसे ऑन कन्टेन्ट एनालाइसिस, ग्रेज्यूएट लाईब्रेरी शिकागों यूनिवर्सिटी ,1941
2. भार्गव महेश : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, हर प्रसाद भार्गव, आगरा 1989
3. चतुर्वेदी सीताराम : शिक्षादर्शन, हिन्दी समिति सूचना विभाग, 1970
4. गांधी एम. के : शिक्षा की समस्या, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 1954
5. गांधी. एम. के. : विद्यार्थियो से,नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 1954
6. गांधी, एम.के. : बेसिन नेशनल एज्यूकेशन, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 1955
7. गांधी.एम.के. : नई तालीम की ओर, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 1956
8. गांधी एम.के. : मेरे सपनो का भारत, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 1960

9. गांधी एम.के. : धर्मनीति, सस्ता साहित्य मण्डल, 1962

10. गांधी. एम के. : सत्य के प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 1951

11. गांधी.एम.के. : टू दी स्नडेन्टस , सर्व सेवा संघ , वाराणस

12. बटलर जे.डी. : फार फिलॉसाफोज, हॉरपर ब्रदर्स न्यूयार्क, 1951

13. दवे जुगतराम : आत्म रचना एवं आश्रमी शिक्षा, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद , 1958

14. चिकरमणें (डॉ) डी वी : भारतीय शिक्षा में गांधी जी का मूल्यांकन एक योगदान, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद

15. बुच एम.बी. : सर्वे ऑफ रिसर्च एज्यूकेशन, बोल्यूम 1, 2, 3 एवं 4 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् , नई दिल्ली

16. चौबे एस.पी. : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय आधार, इन्टरनेशनल पठिलशिंग हाउस मेरठ ।

17. गैरिट हैनरी ई. : रिसर्च एन ऐज्यूकेशन, लांग मेन, 1970

18. ओड़ एल. के. : शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 1973

19. मशरूवाला कि. घ. : शिक्षा का विकास, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर अहमदाबाद 1958

20. कपित एल. के : अनुसंधान विधियॉ, हरप्रसाद भार्गव, आगरा

21. करलिंगर एफ.एम. : फाउण्डेशन ऑफ विहेविरियल रिसर्च, हाल्ट